IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

जनजाति विद्यार्थी का पुस्तकालय के प्रति विमुखता : कारण व समाधान

डॉ. आर.के. कुशवाहा

पुस्तकालयध्यक्ष

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रामपुर नैकिन, जिला सीधी (म.प्र.)

प्रस्तावना-

मध्यप्रदेश सघन वन क्षेत्र वाला राज्य है। यहाँ 3,08,245 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर वन है। इसमें 77700 वर्ग किलोमीटर पर वन क्षेत्र है। जनजातियों की विशेषताओं के अंतर्गत हम यह समझ सकते है कि जनजाति जंगलों में अथवा आस–पास के क्षेत्रों में निवास करती है। मध्यप्रदेश की जनजातीय जनगणना से स्पष्ट होता है कि यहाँ की 75 प्रतिशत जनजातीय आबादी जंगल में अथवा जंगलों के आस–पास निवास करती है। मध्यप्रदेश भारत का जनसंख्या की दृष्टि से अग्रणी राज्य है। जनगणना 2011 आँकड़ों के अनुसार मध्यप्रदेश की जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का 14.7 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश में जनजातियों के कुल परिवार 3198352 है। जबकि महिलाओं की संख्या 7597380 है। लिंगानुपात 984 है, एवं बाल लिंग अनुपात 952 है। मध्यप्रदेश की जनजातियों में साक्षरता दर 50.6 प्रतिशत है। जिसमें पुरूषों की साक्षरता 59.6 प्रतिशत एवं महिलाओं की साक्षरता 41.5 प्रतिशत है।

जनजातीय विकास से अभिप्राय जनजातीय आबादी की कमजोर प्रस्तुति को सुधारते हुए उनके जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाना है। सामाजिक, आर्थिक विकास के सूचक (शिक्षा,स्वास्थ्य, जीवनस्तर) जो निर्धारित किये गए है। उनमें अनुसूचित जनजातियों की लोगों की स्थिति अन्य समूहों की तुलना में कमजोर है। अतः विकास का अभिप्राय इन समुदायों के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाकर इनकी कमजोर स्थिति को ऊपर उठाना है एवं विकास की प्रक्रिया में सहभागी बनाना है। अगस्त 2024 में मध्य प्रदेश की साक्षरता दर 69.32 प्रतिशत थी। यह दर राष्ट्रीय औसत 73 प्रतिशत से कम है। पुरुषों की साक्षरता दर 78.73 प्रतिशत है, जबकि महिलाओं की साक्षरता दर 59.24 प्रतिशत है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-24620